दिल्ली सल्तनत - राजनीतिक इतिहास

(A) प्रारंभिक तुर्क शासक (1206-1290)

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-10)

- मुहम्मद गोरी/शिहाबुद्दीन गोरी/मुहम्मद बिन साम का गुलाम था। अपनी योग्यता के बल पर ऐबक 1192 में भारतीय प्रदेश का देख-रेख करने वाला तथा 1206 में भारतीय प्रदेश के वायसराय के तौर पर नियुक्त किया गया।
- 1206 में लाहौर में राज्यारोहण, 1208 में दासता से मुक्तिपत्र प्राप्त, लेकिन इसने पूरे शासन काल में न तो कभी सुल्तान की उपाधि ग्रहण की न ही अपने नाम का सिक्का ढ़लवाया और न ही इसके नाम का खुतबा पढ़ा गया।
- लाहौर को अपनी राजधानी बनाया, ऐबक को **लाख बख्श** भी कहते थे। 2010 में चौगान खेलते हुए घोड़े से गिरकर लाहौर में मृत्यु हो गई।

आरामशाह (1210)

- ऐबक की मृत्यु के बाद लाहौर के कुछ सरदारों ने आरामशाह को शासक घोषित किया। यह ऐबक का पुत्र था या नहीं इसको लेकर विवाद है।
- दिल्ली के अमीर इस घटना से नाराज थे। ऐबक के दामाद एवं बदायूं के इक्तादार इल्तुतमिश को दिल्ली आकर सिंहासन ग्रहण करने का अमीरों ने आमंत्रण भेजा। इल्तुतमिश बिना किसी विरोध के गद्दी पर बैठा।

शम्शुद्दीन इल्तुतमिश (1211-36)

- इल्बरी तुर्क के शम्सी वंश से इल्तुतमिश का संबंध तथा ऐबक का गुलाम था।
- अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए इल्तुतमिश ने **दलचालीसा** नामक दल का गठन किया।
- 1229 में खलीफा से मान्यता प्राप्त करता है।
- **चांदी** का **टंका** और **तांबे** का **जीतल** नामक **सिक्का** चलाया। अरबी में सिक्कों पर लेख लिखवानें वाला पहला शासक था। सिक्कों पर टकसाल का नाम भी उत्कीर्ण कराया।
- इसकी मृत्यु के बाद 30 वर्ष का इतिहास मुख्यत: सुल्तानों एवं अमीरों के बीच संघर्ष का इतिहास है। व्यवहार में सत्ता दल चालीसा के हाथ में रहती है।

रूक्नुद्दीन फिरोजशाह - 1236

- इल्तुतमिश का पुत्र जो अपने पिता की इच्छा के विरूद्ध तथा अमीरों के समर्थन से गद्दी पर बैठा।
- अयोग्य शासक, शासन पर इसकी मां शाह तुर्कान का प्रभाव था।

रजिया (1236-39)

- रजिया की गद्दी नशीनी का कुछ अमीरों के द्वारा विरोध जिसमें वजीर जुनैदी महत्वपूर्ण था। कूटनीति, शक्ति एवं **जनता के समर्थन से रजिया दिल्ली सल्तनत** की गद्दी पर बैठती है।
- एक विदेशी **जमालुद्दीन याकूत** (अबिसीनिया का हब्शी) को अमीर-ए-आखुर के पद पर नियुक्त किया।
- प्रमुख अमीरों एवं उलेमाओं का विरोध तथा स्वतंत्र शासिका के रूप में रजिया के द्वारा कार्य करने का प्रयास, उसके पतन का महत्वपूर्ण कारण बना।

मुइज्जुद्दीन बहरामशाह (1240-42)

- बहरामशाह को भी तुर्क अमीरों ने गद्दी पर बिठाया। अमीरों ने अपने अधिकारों में वृद्धि के लिए नायब या **नायब-ए-ममलिकात** नामक नया पद बनाया।

अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-46)

नसिरूद्दीन महमूद (1246-65)

- इसका शासन काल अमीरों की शक्ति का चरमोत्कर्ष था। इसने स्वयं कभी शासन नहीं किया। महमूद धर्मधपरायण व्यक्ति था जिसका अधिकांश समय कुरान की नकल करने में व्यतीत होता था। सुल्तान बल्बन का दामाद था। 1249 में बल्बन को उलूग खां की उपाधि दी गयी तथा नायब का पद दिया गया। धीरे-धीरे सत्ता पर बल्बन की पकड़ मजबूत होती गयी। (अपवाद- 1253 में कुछ समय के लिए **इमामुद्दीन रेहान** नायब के पद पर रहा)।

ग्यासुद्दीन बलबन (1265-87)

- इल्बरी तुर्क, द्वितीय इल्बरी वंश का संस्थापक

राजत्व सिद्धांत

- राजपद को **नियाबते खुदाई** अर्थात् ईश्वर का प्रतिनिधित्व माना और शासक को **जिल-अल्लाह** अर्थात् ईश्वर की छाया कहा।
- **सिजदा** (भूमि पर लेटकर सम्राट का अभिवादन करना) एवं **पाबोस** (सम्राट के पैर को चूमना) प्रथा की शुरूआत की।
- दरबार में हंसी मजाक को वर्जित करता है।
- राजा के प्रभाव को बनाये रखने तथा भय दिखाने के लिए नंगी तलवारों से लैस अंगरक्षकों से घिरा रहता था।
- दरबार में **नौरोज** का प्रचलन आरंभ किया।
- **कुलीनवाद** या **तुर्की नस्ल** की श्रेष्ठता का समर्थक था।
- मेवात, अवध एवं कटेहर में विद्रोहों का दमन करता है तथा लुटेरों से दिल्ली को सुरक्षित करता है। इसकी नीति को **'रक्त एवं लौह'** की नीति भी कहा जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

कैकुबाद

- बल्बन ने कैखुसरो को अपना उत्तराधिकारी नामजद किया लेकिन दिल्ली के कोतवाल फखरूद्दीन ने **कैकुबाद** को गद्दी पर बिठाया।
- सुल्तान को लकवा मारने के बाद **क्यूमर्स** को गद्दी पर बिठाया गया। अंततः क्यूमर्स की हत्या कर मलिक फिरोज खिलजी सुल्तान बना।

(B) खिलजी वंश 1290-1320

- **संस्थापक-जलालुद्दीन फिरोजशाह ख़िलजी 1290-96)**
- प्रथम अभियान 1291 में रणथम्भौर के खिलाफ। इस दौरान झाइन पर नियंत्रण स्थापित किया।
- 1291-92 में ही अब्दुल्ला के नेतृत्व में मंगोल आक्रमण जिसे सुल्तान ने विफल किया। दोनों के बीच संधि हुई जिसमें उलूग खां के नतृत्व में कुछ मंगोलों ने इस्लाम धर्म अंगीकार किया एवं दिल्ली में बसने का निर्णय लिया। ये **नव मुलसमान** कहलाये।
- सुल्तान की अनुमति से अलाउद्दीन ने भिलसा पर आक्रमण किया एवं इसे लूटा। यहीं पर देवगिरि के समृद्धि की चर्चा सुनी। **1296 में देवगिरि पर आक्रमण** एवं बड़ी मात्रा में धन सम्पदा पर अलाउद्दीन का नियंत्रण स्थापित हुआ।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316)

- **राज्यरोहण :-** कड़ा में राज्यरोहण एंव दिल्ली पहुंचने के बाद बल्बन के लाल महल में राज्यरोहण।

कार्य

विद्रोह का दमन

- **1299 में नव मुसलमानों** का विद्रोह, गुजरात अभियान से प्राप्त लूट के बंटवारों को लेकर।
- **हाजी मौला** का विद्रोह,

उत्तरी भारत की विजय

1. **गुजरात विजय :-** 1299 में उलूग एवं नुसरत खां द्वारा, शासक- कर्णबघेला, (पत्नी - कमलादेवी), पुत्री- देवलरानी, राजधानी - अन्हिलवाड़ा
2. **रणथम्भोर (1300-01) शासक- हम्मीर देव**
   - अमीर खुसरों रणथम्भोर अभियान में साथ थे। इन्होंने रानियों के द्वारा जौहर व्रत का वर्णन किया है। किसी समसामयिक लेखक द्वारा जौहर व्रत का प्रथम विवरण है।
3. **चित्तौड अभियान (1303) शासक** - राणा रतन सिंह
4. **मालवा (1305) :** शासक - महलक देव
5. **सिवाना (1309) :** शासक- शीतलदेव

दक्षिणी अभियान

- विलीनीकरण की नीति के जगह **अधिराजत्व की नीति** अपनायी गयी।

1. **देवगिरि पर आक्रमण (1306-07)** यादव वंश, शासक - राजा रामचन्द्र देव, रामचन्द्र को 'रायरायन की उपाधि, 1 लाख सोने के टंके एवं नवसारी का जिला दिया गया। देवलरानी का विवाह खिज्र खां से किया गया।
2. **तेलांगाना पर आक्रमण (1309) : काकतीय वंश**, राजधानी - वारंगल, शासक - प्रतापरूद देव
3. **द्वारसमुद्र पर आक्रमण (1310) :** होयसल वंश का शासन, राजधानी - द्वारसमुद्र, शासक - वीर बल्लाल-II
4. **मदुरा पर आक्रमण :-** पाण्डय वंश का शासन, राजधानी - मदुरा (जिसे मुस्लिम इतिहासकार माबर कहते थे)।

आर्थिक सुधार

1. लगान संबंधी सुधार

- दोआब में लगान की दर में वृद्धि की। 1/3 से बढ़ाकर 50% किया।
- कर मुक्त भूमि (**इनाम, मिल्क, वक्फ, इदरार**) को वापस लिया।
- भूमि माप (**मसाहत**) के आधार पर लगान का निर्धारण किया।
- मध्यस्थ वर्ग को (**खुत, मुकद्दम, चौधरी**) लगान वसूली के कार्य से मुक्त किया।
- अलाउद्दीन ने **खुम्स** (युद्ध में लूटे गए माल से राज्य का अंश) की दरों में परिवर्तन किया। अब राज्य का हिस्सा कुल लूट में 1/5 भाग के जगह 4/5 भाग कर दिया।
- घरही एवं चरही नामक कर लगाया।

2. आर्थिक विनियमन/मूल्य निर्धारण/ बाजार नियंत्रण की नीति

- अलाउद्दीन खिलजी ने मुख्यतः **सैन्य खर्चों** को कम करने के **उद्देश्य** से आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को निधारित किया। इसका प्रभाव मुख्यतः **दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों** में महसूस किया गया। कीमतों को निर्धारित करनें के लिए तीन प्रकार के बाजरों की स्थापना की -
- **मंडी** जहां अनाज का व्यापार होता था।
- **सराय अदल** जहां वस्त्र एवं अन्य वस्तुओं का व्यापार होता थाा।
- **दास, घोड़ों एवं मवेशियों** का बाजार
- बाजारों पर नियंत्रण के लिए **दीवान-ए-रियासत** (वाणिज्य विभाग) नामक नये विभाग का गठन किया। इस विभाग के अधीन प्रत्येक बाजार के लिए **अधीक्षक/शहना** की नियुक्ति की गई। इसके लिए **मुन्हियाँ (गुप्तचर)** भी नियुक्त किए गए। सुल्तन अपने दासों के द्वारा भी सामान खरीदकार कीमतों की जांच करता था।

Scanned with OKEN Scanner

सैनिक सुधार

- एक विशाल सेना का गठन जिसकी संख्या फरिश्ता ने लाख 75 हजार बतायी है।
- सैनिकों को **नकद वेतन** देना प्रारम्भ किया।
- **दाग एवं हुलिया** का प्रचलन प्रारंभ किया।
- किलों के निर्माण एवं अस्त्र-शस्त्र में सुधार पर भी ध्यान दिया।

कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी (1316-1320)

(C) तुगलक वंश (1320-1412)

- **संस्थापक - ग्यासुद्दीन तुगलकशाह**
- **1321-23 में वांरगल** को दिल्ली सल्तनत में मिलाया। जौना खां ने अभियान का नेतृत्व किया था।
- **अफगानपुर** की दुर्घटना एवं ग्यासुद्दीन तुगलक की मृत्यु (1325) सुल्तान के स्वागत के लिए दिल्ली के नजदीक अफगानपुर नामक गांव में लकड़ी का एक अस्थायी महल जौना खां ने बनवाया। अचानक मंडप गिरने से ग्यासुद्दीन की मृत्यु हो गयी।

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51)

- भारतीय इतिहास में मुहम्मद बिन तुगलक अपने नवीन योजनाओं के लिए जाना जाता है। समकालीन इतिहासकारों ने पाँच प्रयोगों का उल्लेख किया है-

1. दोआब में भूमि कर वृद्धि

- करों की दर को बढ़ाकर 50% किया गया। जब दरों में वृद्धि की गई तब दोआब में अकाल आया था। प्रारम्भ में करों को कठोरता पूर्वक वसूला गया। आगे चलकर किसानों को राहत देने का प्रयास किया गया। इसके लिए 2 करोड़ टंके का **तकावी ऋण** दिया गया. ताकि किसान हल, बैल, वीज इत्यादि खरीद सके।

दोआब में ही अन्य प्रयोग

- राजकीय सहायता से कृषि योग्य भूमि के विकास के प्रयास किये गये। इसके लिए **दीवान-ए-कोही** नामक विभाग की स्थापना की गयी। 70 लाख टंका खेती के विकास के लिए दिया गया। फसलों की अदला-बदली कर खेती के विकास की योजना थी। इस योजना के लिए तीन वर्ष का समय निर्धारित किया गया था। यह योजना भी असफल हुई - इसका कारण बंजर भूमि का चुनाव, पैसे का गबन इत्यादि था।

2. राजधानी परिवर्तन

- तुगलक ने दिल्ली से देवगिरि राजधानी को स्थानातरित करने का आदेश दिया। सम्भवतः इसका मुख्य कारण दक्षिण पर प्रभावी नियंत्रण बनाये रखना था। गर्मी के दिनों में इस निर्णय को लागू किया गया। अधिकारियों एवं जनता को कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। अंततः राजधानी दोबारा दिल्ली वापस लाया गया।

3. सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन

- मोहम्मद बिन तुगलक का एक महत्वपूर्ण प्रयोग सांकेतिक मुद्रा का प्रचालन था। इसके अंतर्गत चांदी के टंके के स्थान पर तांबे का सिक्का चलाया गया। इसके पीछे शायद अर्थव्यवस्था पर दबाव और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में चांदी की कमी थी। यह योजना भी असफल रही इसका मुख्य कारण योजना पर जनता एवं व्यवसायी वर्ग का भरोसा न होना तथा नकल को रोकने के लिए प्रभावी रूप से प्रयास न किया जाना था।

4. खुरासान अभियान

- मध्य एशिया पर नियंत्रण स्थापित करने की योजना, इसके लिए विशाल सेना का गठन लेकिन मध्य एशिया के राजनीतिक परस्थितियों में बदलाव के कारण योजना को त्याग दिया गया। इससे सैनिक बेरोजगार और सुल्तान का विरोध प्रारम्भ हुआ।

5. कराचिल अभियान

- कराचिल क्षेत्र सम्भवतः भारत और चीन के बीच पड़ता था। उत्तर में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए तुगलक ने यह योजना बनाई। प्रारम्भ में सफलता भी मिली लेकिन प्राकृतिक आपदा के कारण सेना को व्यापक नुकसान हुआ। अंततः यह योजना भी असफल रही।

मुहम्मद बिन तुगलक के खिलाफ प्रमुख विद्रोह

- 1334-35-माबार का सफल विद्रोह (एहसान शाह)
- 1338-40 - बंगाल स्वतंत्र, शमसुद्दीन के उत्तराधिकारी इलियास शाही वंश की स्थापना करते हैं।
- **1345-46 में सादह अमीरों का विद्रोह (खुरासानी मुसलमान), वे खंभात से लेकर दौलताबाद के बीच विद्रोह करते है। सुल्तान इन्हें आइज्जा (प्रिय) कहता था। 1347 में सादह अमीरों में से हसन गंगू के नेतृत्व में बहमनी साम्राज्य की स्थापना।**
- तग्गी का विद्रोह (1347)- तग्गी का पीछा करते हुए सुल्तान की थट्टा में मृत्यु।

फिरोजशाह तुगलक (1351–88)

I) M.B.T के थट्टा में मृत्यु के बाद अमीर एवं उलेमाओ के द्वारा F.S.T का थट्टा में ही राज्यारोहण कर दिया गया। M.B.T का कोई निश्चित उत्तराधिकारी नहीं था। F.S.T के पिता का नाम रज्जब एवं माता भट्टी राजपूत (नाईला) थी। शासक बनते ही ख्वाजा जहाँ का विद्रोह, लेकिन उसने विद्रोहियों को माफी दी। दिल्ली आने के बाद पुनः राज्याभिषेक करवाया।

Scanned with OKEN Scanner

II) सैनिक अभियान :-

- साम्राज्य विस्तार के लिये कोई अभियान नहीं किया।
- दक्षिण भारत में कोई अभियान नहीं।
- 1353 & 1359 में बंगाल पर दो आक्रमण लेकिन दोनों विफल रहे, दूसरे अभियान से लौटते हुये गजपति वंश के राज्य जाजनगर (उड़ीसा) पर भी आक्रमण किया।
- 1365 नगरकोट का अभियान-(संस्कृत पुस्तकों को दिल्ली लाया गया)।
- 1365–67 F.S.T का अंतिम अभियान थट्टा के शासक जाम बावनिया के विरूद्ध। इस अभियान में F.S.T रास्ता भटक जाता है। दिल्ली में वजीर, खाने-जहाँ-मकबूल ने 6 महीने तक शासन को संभाला।

III) नगरों का निर्माण एवं पुर्ननिर्माण कार्य

- F.S.T ने फतेहाबाद, फिरोजाबाद, हिसार-फिरोजा, फिरोजपुर एवं जौनपुर (M.B.T की याद में) नगर का निर्माण करवाया।
- हौज-ए-शम्सी (इलतुतमिश), हौज-ए-खास (अलाउद्दीन खिल्जी) नामक तलाब तथा इल्तुतमिश के मदरसे की मरम्मत करवायी।
- फिरोजाबाद में मदरसा बनवाया।

IV) कुछ विभागों की स्थापना

- दार-उल-सफा – राजकीय अस्पताल
- दीवान-ए-खैरात – गरीबों के लिये
- दफ्तर-ए-रोजगार –बेरोजगारों के लिये

V) महत्त्वपूर्ण आर्थिक कार्य

- राज्य की आय का प्रमाणिक ब्यौरा तैयार करने के लिये ख्वाजा हेमासुद्दीन को नियुक्त किया जिसने लगान की आमदनी 6 करोड 78 लाख टंका निर्धारित की।
- सिंचाई के लिये लगभग 11 नहरों का निर्माण दिल्ली एवं हरियाणा में करवाया गया। मध्यकाल में सर्वाधिक नहरों का निर्माण कराने वाला शासक। सिंचाई युक्त भूमि पर अलग से हक्के-शर्ब नामक कर आरोपित किया।
- राजकीय आय में वृद्धि के लिये 1200 बाग लगवाये, जिससे प्रतिवर्ष 1 लाख 80 हजार टंका की आय राज्य को होती थी।
- किसानों पर करों की दर 1/3 निर्धारित किया। फुतुहाते-फिरोजशाही के अनुसार यह उपज का 1/5 भाग था।
- किसानों पर लगे तकावी ऋण को माफ किया।

VI) धार्मिक नीति :-

- प्रशासनिक नीतियों के निर्धारण में इस्लामिक कानूनो को महत्त्व दिया।
- पुरी के जगन्नाथ मन्दिर एवं कांगडा के ज्वालामुखी मन्दिर को लूटा, ब्राह्मणों पर जिज़्या कर आरोपित किया तथा एक ब्राह्मण को मृत्युदंड दिया।
- शिया, सूफी एवं महदियों का भी दमन किया।

VII अन्य कार्य

- सरकारी एवं सैन्य पदों को वंशानुगत बना दिया। इक्ता को भी वंशानुगत बना दिया तथा खुतबे में तुगलक शासकों के साथ-साथ अन्य शासको का भी नाम (ऐबक को छोड़कर) लिया जाने लगा।

F.S.T के उत्तराधिकारी

- फिरोज के मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी अयोग्य साबित हुये। अमीरों एवं दासों के द्वारा सत्ता के लिये किये जाने वाले षड्यंत्र, उत्तराधिकार से सम्बन्धित संघर्ष एवं वित्तीय संकट ने राज्य को खोखला कर दिया।
- **उत्तराधिकारी** – तुगलक शाह II (1388-89), अबूबक्र (1389-90), मुहम्मद शाह (1390-94) एवं [redacted] महमूद शाह (1394-1412) थे। (महमूद शाह)
- नसिरूद्दीन महमूद के समय 1398-99 में समरकंद के शासक तैमूर का दिल्ली पर आक्रमण, फलत: शासक को दिल्ली छोड़कर भागना पड़ा। पुन: 1405 में दिल्ली वापसी। इसके शासन में निम्नलिखित स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई है –

1. **1398 – जौनपुर – शर्की वंश – मालिक-उस-शर्क**
2. **1401 – गुजरात – मुजफ्फर शाही वंश – जफर खाँ/ख्वाजा जहाँ**
3. **1406 – मालवा – हुसंगाशाही वंश– दिलावर खाँ**

D. सैय्यद वंश (1414–1451)

1) **खिज्र खाँ– (1414-21) :–** तैमूर के पौत्र शाहरूख के प्रतिनिधि के तौर पर शासन किया। कभी सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की। स्वयं को रैयत-ए-आला कहा करता था।

2) **मुबारक शाह (1421-34) :–** तारीखे मुबारकशाही की रचना इन्हीं के समय हुई।

3) **मुहम्मद शाह (1434-1445)**

4) **आलम शाह (1445-51) :– अंतिम शासक**, बहलोल लोदी को सत्ता सौंपकर बदायूँ चला जाता है।

E. लोदीवंश (1451-1526 A.D)

ये मूलत: अफगानिस्तान के गिलजई कबीले के है। इस वंश के 3 शासकों ने दिल्ली सल्तनत पर शासन किया।

1) बहलोल लोदी – (1451–1489)
2) सिकन्दर लोदी – (1489–517)
3) इब्राहिम लोदी – (1517–1526)

1. बहलोल लोदी

दिल्ली सल्तनत में **सबसे लम्बे समय तक शासन करने**

Scanned with OKEN Scanner

वाला एवं लोदी वंश का संस्थापक बहलोल लोदी था। इसने अपने शासन का संचालन **"समानों में प्रथम" की भावना** के आधार पर किया तथा इसके व्यवहारिक अभिव्यक्ति के लिए राजसिंहासन का कभी प्रयोग नहीं किया।

इसने शाही पदवी कभी धारण नहीं की। सुल्तान के जगह अपने आप को 'मसनबी आली' कहता था। अपने सामन्तों के साथ एक कालीन पर बैठकर प्रशासनिक कार्यों को सम्पन्न करता था। विरोधी अफगान सामन्तों को मनाने के लिए उदार नीति अपनाकर तथा अफगानों को सरकारी सेवा में आकर्षित करने का बहलोल ने प्रयास किया। इसने बड़ी संख्या में रोह के अफगानों को सल्तनत की सेना में भर्ती करने की नीति अपनायी।

बहलोल लोदी के शासन का महत्त्व

- तैमूर के आक्रमण के बाद दिल्ली सल्तनत की पुर्नस्थापना का पहली बार कार्य प्रारम्भ हुआ।
- जौनपुर के शर्की शासक (हुसैन शाह) को पराजित किया एवं शर्की वंश को समाप्त किया। लेकिन जौनपुर को दिल्ली सल्तनत में नहीं मिलाया बल्कि अपने पुत्र बारबक शाह को वहाँ का शासक नियुक्त किया।
- 1468-69 में मुल्तान पर नियंत्रण स्थापित किया।
- 1486-87 में ग्वालियर के शासक राय कर्ण को पराजित कर नजराना देने के लिए बाध्य किया।

2. सिकन्दर लोदी (निजाम खाँ)

अपने पिता बहलोल के मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी के युद्ध में अपने भाई बारबक शाह को पराजित कर दिल्ली सल्तनत का शासक बना।

सिकन्दर लोदी का राजत्त्व सिद्धांत

- इसने बहलोल लोदी के राजत्त्व सिद्धांत में परिवर्तन किया। इसने शासक के पद को गौरवपूर्ण बनाना चाहा। राजसिंहासन का प्रयोग करना आरम्भ किया। अमीरों की शक्ति पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए गुप्तचर व्यवस्था को मजबूत किया जागीर के आय का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने के लिए उन्हें बाध्य किया गया। उसने सामन्तों को अनुशासित किया, अपमानित नहीं।

महत्त्वपूर्ण युद्ध एवं संधि

- 1492 में जौनपुर को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।
- 1495 में बंगाल के सुल्तान अलाउद्दीन हुसैन शाह से एक संधि की, जिसमें दोनों पक्ष एक दूसरे पर आक्रमण न करने तथा एक दूसरे के शत्रुओं को सहायता न देने का आश्वासन दिया।
- बिहार में मुंगेर तक सल्तनत की सीमा का विस्तार किया।
- मध्य भारत में ग्वालियर के मान सिंह एवं धौलपुर के विनायकदेव को भी सिकन्दर लोदी ने पराजित किया।
- राजपूतों के संभावित आक्रमण को रोकने एवं दोआब पर प्रभावी ढंग से नियंत्रण बनाए रखने के लिए **1504 में आगरा शहर की स्थापना की एवं अपनी राजधानी को स्थानान्तरित किया।**

सिकन्दर लोदी के अन्य कार्य

- तैमूर के आक्रमण के बाद सल्तनत की सीमा में अधिकतम वृद्धि सिकन्दर लोदी के समय में ही हुई।
- दिल्ली पुनः राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बनी।
- भूमि की माप के लिए **गजे-सिकन्दरी** का प्रयोग आरम्भ हुआ।
- F.S.T. के मदद कार्यक्रम को जारी रखा, जैसे- निर्धनों को मदद, मुफ्त भोजन इत्यादि।
- बेरोजगारों को मासिक भत्ता देने वाला संभवतः एकमात्र शासक था।
- **साहित्य – फरहंगे सिकन्दरी** चिकित्सा विज्ञान पर लिखा।
- लज्जते-सिकन्दरी नश्त्य-गान पर लिखा।
- गुलरूखी उपनाम से कविताएँ लिखता था।
- इसकी धार्मिक नीति असहिज़्णुता पर आधारित थी।
- सूफी संत के मजार पर, महिलाओं के जाने पर रोक लगायी।
- बहराईच में शिया मुसलमानों के जुलूस पर प्रतिबंध लगाया।
- कबीर जैसे भक्त संत से मनमुटाव था।

3. इब्राहिम लोदी

- सिकन्दर लोदी के मृत्यु के बाद इब्राहिम लोदी उत्तराधिकार के युद्ध में विजयी होकर (जलाल खाँ को पराजित कर) सल्तनत का शासक बना।

राजत्व सिद्धांत

- शासक के पद को गौरवपूर्ण बनाने के लिए सामंतों पर कठोर नियंत्रण स्थापित किया। "राजतंत्र में कुंबापरवारी का कोई स्थान नहीं"।

युद्ध :-

- ग्वालियर को जीता
- **1518 में घटौली या बकरौल की लड़ाई** में राणा सांगा से हारा।
- **1526 में बाबर से पानीपत के प्रथम युद्ध** में हारा, बाबर को आक्रमण का निमंत्रण दौलत खाँ लोदी (पंजाब का सूबेदार), आलम खाँ लोदी एवं राणा सांगा 80 युद्धों का विजेता ने दिया था।

सुल्तान एवं खलीफा का संबंध

- ऐबक ने खलीफा से मान्यता प्राप्त करने का कोई प्रयास नहीं किया।
- इल्तुतमिश ने 1229 A.D. में बगदाद के खलीफा अल बिल्लाह से मान्यता प्राप्त की।

Scanned with OKEN Scanner

- अलाउद्दीन खिलजी ने यामिन-उल-खिलाफत (खलीफा का दायां हाथ) एवं नासिरि-अमीर-उल-मोमीनी (खलीफा का सहायक) की उपाधि धारण की।
- कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी स्वयं ही 'खिलाफुतुल्लाह' की उपाधि धारण करता है।
- मोहम्मद बिन तुगलक शासन के अंतिम दिनों में खलीफा से मान्यता प्राप्त करता है।
- फिरोजशाह तुगलक भी खलीफा से मान्यता प्राप्त करता है। इसके सिक्कों पर उत्कीर्ण है 'खलदास-खिलाफत' (खलीफा का दास)
- **दिल्ली सल्तनत के तीन शासकों ने खलीफा से मान्यता प्राप्त किया- इल्तुतमिश, मोहम्मद बिन तुगलक एवं फिरोजशाह तुगलक।**

सुल्तान और उलेमा के बीच संबंध

- शरा/शरियत- इस्लामिक कानून
- जवाबित - राजकीय/धर्मनिरपेक्ष कानून
- सल्तनत काल में उलेमा अत्यंत ही प्रभावशाली वर्ग
- **अलाउद्दीन और मो. बिन तुगलक को छोड़कर सल्तनत के शासन पर उलेमा वर्ग का हमेशा प्रभाव।**
- **उलेमाओं की पूरे सल्तनत काल में सबसे अच्छी स्थिति फिरोजशाह तुगलक के समय एवं सबसे बुरी स्थिति मोहम्मद बिन तुगलक के समय।**
- **धर्म को राजनीति से अलग करने वाला पहला शासक अलाउद्दीन खिलजी।**

सुल्तान एवं अमीर संबंध

- शासन में प्रभावशाली वर्ग, इनकी स्थिति में गिरावट अलाउद्दीन खिलजी एवं मोहम्मद बिन तुगलक के समय होती है।

मंगोल आक्रमण

- **इल्तुतमिश** :- दिल्ली सल्तनत पर पहली बार मंगोल आक्रमण का खतरा उपस्थित हुआ। हालांकि चंगेज खां ने आक्रमण नहीं किया।
- **बहरामशाह** :- पहली बार मंगोल आक्रमण (1241 A.D.) लाहौर को व्यापक नुकसान पहुंचाया गया।
- **बलबन** :- मंगोल हमले में बलबन का पुत्र मोहम्मद मारा गया। बलबन ने मंगोलों को व्यास नदी तट पर रोके रखा। मंगोलो के भय के कारण बलबन ने विस्तार के लिए कोई अभियान नहीं चलाया।
- **अलाउद्दीन खिलजी** :- सर्वाधिक मंगोल आक्रमण [redacted], अलाउद्दीन पहला शासक जिसने मंगोले के प्रति आक्रामक रूख अपनाया।
- **मोहम्मद बिन तुगलक** :- तरमासारीन के नेतृत्व में मंगोलो का अंतिम एवं असफल अभियान।

दिल्ली सल्तनत का प्रशासन

सुल्तान

- शासन का सर्वोच्च अधिकारी होता था।
- दिल्ली सल्तनत में सुल्तान कोई भी बन सकता था, इसके लिए कोई मान्य नियम नहीं था। लेकिन व्यवहार में गद्दी पर वही बैठता था जो किसी शासकीय परिवार से संबंध रखता हो या प्रशासन में ऊंचे पद पर बैठा हो।

सुल्तान के विशेषाधिकार

- खुत्बा और सिक्का जारी करना उसकी प्रभुसत्ता का प्रतीक समझा जाता था।
- शाही छत्र, पत्रका, राजचिन्ह, इत्यादि धारण करना, सुल्तान की पदवी धारण करना।

केन्द्रीय स्तर पर चार महत्वपूर्ण विभाग

(A) दीवान-ए-विजारत/वजारत

- मुख्य कार्य वित्त से संबंधित।
- राजस्व का निर्धारण वसूली, अधिकारियों को वेतन देने जैसे कार्य इसी के द्वारा सम्पन्न।

सम्बन्धित विभाग

1. **दीवान-ए-मुस्तखराज** अलाउद्दीन खिलजी द्वारा स्थापित
   कार्य- राजस्व वसूल करने वाले अधिकारियों के पास बकाया राशि की जांच तथा उसकी वसूली करना।
2. **दीवान-ए-कोही** मो.बिन तुगलक द्वारा स्थापित।
   कार्य - कृषि में सुधार।

(B) दीवान-ए-आरिज

- आरिज-ए-मुमालिक (प्रमुख)
- स्थापना बलबन द्वारा

कार्य

- सेना की भर्ती, प्रशिक्षण, रसद, वेतन की व्यवस्था करना।

(C) दीवान-ए-इंशा :- पत्राचार मंत्रालय

- **प्रमुख - दबीर-ए-मुमालिक**
- यह मंत्रालय शाही घोषणा तथा शाही पत्र का मसौदा तैयार करता था, तथा इसे जारी भी करता था।

(D) दीवान-ए-रसालत

- इसके स्वरूप को लेकर विवाद।
- कुछ विद्वान इसे विदेश मंत्रालय मानते हैं, तो कुछ धार्मिक मंत्रालय।

Scanned with OKEN Scanner

- ज्यादातर विद्वान इसे धार्मिक मंत्रालय मानते हैं और इसका प्रमुख **सद्र-उस-सुदूर/सद्रे-मुमालिक** होता था।
- यह न्यायिक कार्यों को छोड़कर अन्य धार्मिक कार्यों की देखरेख करता था। जैसे- धार्मिक अनुदानों की देखरेख, शिक्षण संस्थानों की स्थापना इत्यादि।
- न्यायिक कार्यों को संपन्न करने के लिए **काजी-उल-कुजात/काजी-उल-मुमालिक** होते थे।
- सामान्यत: ये दोनों पद एक ही व्यक्ति के पास हुआ करता था।

मुहतसिब

- न्याय से जुड़ा एक अन्य अधिकारी।
- यह जनता के नैतिक आचरण को नियंत्रित करता था तथा काजी एवं सद्र को न्यायिक कार्यों में सहयोग देता था।

केन्द्रीय स्तर के महत्वपूर्ण अधिकारी

1. **अमीर-ए- हाजिब/तुजुक/बरबक**

- दरबारी शिष्टाचार के अनुपालन का दायित्व इसके ऊपर था।

2. **वकील-ए-दर**

- राजमहल, राजपरिवार तथा दरबार की जरूरतों की देख रेख एवं पूरा करने वाला अधिकारी।

3. **बरीद-ए-मुमालिक**, गुप्तचर विभाग का प्रमुख,

- बलबन द्वारा इस विभाग की स्थापना।

4. **सर-ए- जानदार** - शाही/सुल्तान के अंगरक्षकों का प्रमुख।
5. **अमीर-ए-आखुर** - शाही अश्वशाला का प्रमुख
6. **अमीर-ए- शिकार** - शाही आखेट का प्रबंधकर्त्ता
7. **शहना-ए- पील** - हाथी सेना का प्रमुख
8. **मीर-ए-बहर** - नौपरिवहन/पोत विभाग का प्रमुख
9. नायब-ए-मामलिकत

कारखाना

- सल्तनत काल में इसका आशय बहुत व्यापक।
- शाही जरूरत का सारा सामान कारखानों में तैयार होता था।
- पुस्तकालय, अस्तबल इत्यादि की कारखाने में शामिल
- फिरोजशाह के समय कारखानों का महत्व इक्ता के समान होता था।
- फिरोजशाह के समय कुल 36 कारखाने थे।

प्रांतीय प्रशासन

– केन्द्रीय क्षेत्र या खालसा क्षेत्र के बाहर सल्तनत के प्रत्यक्ष नियंत्रण में आने वाले क्षेत्र को **इक्ता, सूबा, विलायत या प्रांतों** में बांटा गया।

प्रशासनिक विभाजन क्यों या इक्ता की स्थापना क्यों?

- प्रशासनिक सुविधा के लिए।
- नियामित राजस्व वसूली के लिए।
- ग्रामीण एवं सुदूर क्षेत्रों पर पकड़ बनाए रखने तथा
- अमीर वर्गों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए।

=: तथ्य :=

- सल्तनत काल में सर्वाधिक प्रांतों की संख्या मो. बिन तुगलक के समय 23 एवं सबसे कम प्रांत लोदियों के समय 4 थी।
- प्रांत प्रमुख को **वली/ मुक्ता/ नायब-ए-सुल्तान /नाजिम/ अमीर** कहते थे।
- इनका कार्यकाल तय नहीं, सामान्यत: 5 वर्षों में स्थानांतरण हो जाता था।
- इनकी पदोन्नति एवं पदावनति दोनों होता था।
- इनकी प्रमुख दायित्व - **निश्चित संख्या में सैनिकों की नियुक्ति करना।**
- विधि एवं व्यवस्था बनाए रखना।
- राजस्व की वसूली करना।

शिक (जिला)

- गांवों एवं प्रांतों के बीच की प्रशासनिक इकाई
- सर्वप्रथम 1279 में बलबन के समय इसकी जानकारी मिलती है।
- तुगलक शासकों के समय संपूर्ण प्रांतों को शिकों में विभाजित किया गया अर्थात् एक नियमित प्रशासक इकाई के तौर पर शिक का विकास तुगलकों के समय।

अधिकारी

1. **फौजदार** –शिक/जिला, प्रमुख विधि व्यवस्था बनाए रखना।
2. **शिकदार** – राजस्व की वसूली करता था।

परगना

- शिक के नीचे की प्रशासक इकाई
- कई गांवों का समूह होता था।

अधिकारी

1. **चौधरी** - विधि व्यवस्था बनाए रखना एवं राजस्व वसूली में आमिल/अमलगुलार की सहायता करना।

- चौधरी की जानकारी पहली बार 14वीं सदी में मिलती है, बरनी के द्वारा पहली बार चर्चा।
- इब्नबतूता चौधरी को सदी या सौ गांवों का प्रमुख कहता था।

गांव

- सबसे छोटी प्रशासनिक इकाई, लेकिन केन्द्र के द्वारा कोई हस्तक्षेप नहीं, कोई प्रशासक/अधिकारी की नियुक्ति नहीं।

Scanned with OKEN Scanner

- यह प्रशासन इकाई पहले से ही चली आ रही थी।
- पहली बार अलाउद्दीन खिलजी के समय गांवों में सीधे केन्द्रीय प्रशासन की पहुंच स्थापित।
- **खुत** -गांव का मुखिया
- **मुकद्दम**
- **पटवारी** - जमीन संबंधी रिकॉर्ड रखते थे।

कृषि से संबंधित कर

1. **उश्री भूमि पर कर**

- कृषि योग्य भूमि पर बाहर से आए मुसलमानों द्वारा दिया जाने वाला कर। इसकी दर खराज से कम हुआ करती थी।

2. **खराज/माल**

- भू राजस्व के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग
- कृषि योग्य भूमि पर गैर मुस्लिम रियासत से लिया जाने वाला कर।
- इसकी दर उपज की आधे से अधिक नहीं हो सकती थी।
- संपूर्ण सल्तनत काल में इसकी दर उपज की लगभग 1/3 थी। अपवाद अलाउद्दीन खिलजी व मो. बिनतुगलक के समय 1/2 थी।

3. **हक-ए-शर्ब**

- सिंचाई कर, फिरोजशाह द्वारा लगाया गया।
- उपज का 1/10 होता था।

4. **चरही कर**

- अलाउद्दीन खिलजी व मो. तुगलक द्वारा लगाया गया चराई पर कर।

5. **घरही कर**

- अलाउद्दीन खिलजी व मो. तुगलक द्वारा लगाया गया।

6. **हक-ए- खोती** -

जकात

- इस कर की अदायगी केवल मुस्लिम करते थे।
- संपत्ति पर लिया जाने वाला कर।
- कर अदायगी की कुछ शर्तें हुआ करती थी।
- जिस संपत्ति पर वे कर दे रहे हैं उसका उपयोग कम से कम 1 वर्ष तक किया है।
- संपत्ति की एक निश्चित सीमा के ऊपर ही कर लिया जाता था। इस सीमा को निसाब कहते थे।
- इस कर का उद्देश्य निर्धन मुसलमानों का कल्याण करना था।
- कर की दर- 2.5%

जजिया

- गैर मुसलमानों (जिम्मियों) से लिया जाने वाला कर
- इस कर की मांग जिम्मियों की संपत्ति एवं सम्मान की रक्षा के लिए।
- सर्वप्रथम सिंध में मुहम्मद विन कासिस ने इस कर को लगाया था।
- दिल्ली सल्तनत में इस कर को लगाने वाला **शासक इल्तुमिश** था। ब्राह्मण, महिला, बच्चे एवं भिखारी इस कर से मुक्त थे। **फिरोजशाह तुगलक ने ब्राह्मणों पर** भी जजिया कर लगाया था।
- जजिया की दर अलग-अलग वर्ग के लिए अलग-अलग हुआ करती थी।

खम्स/खुम्स

- यह लूट से प्राप्त आय।
- इस आय का 4/5 भाग या 80% सैनिकों के पास तथा 20% शासक को प्राप्त होता था। (80:20)

दिल्ली सल्तनत में करों का निर्धारण

- तीन-तरीके 1. बंटाई 2. अनुमान आधारित 3. मसाहत (भूमि माप पर अधारित)

1. बंटाई

- सर्वाधिक प्रचलित तरीका
- सल्तनत काल के पहले से चली आ रही थी।

2. मुक्तई या नस्क

- राजस्व वसूली अनुमान पर आधारित।

3. मसाहत

- यहां करों का निर्धारण भूमि के माप के आधार पर किया जाता था।

सैन्य प्रशासन

- दिल्ली सल्तनत के सैन्य प्रशासन पर तुर्क मंगोल व्यवस्था का प्रभाव दिखाई पड़ता है।
- सर्वप्रथम इल्तुतमिश ने शाही अंगरक्षकों का एक दल गठित

Scanned with OKEN Scanner

किया जिसे जानदार कहा जाता था।

- युद्ध के समय यही शाही सेना का काम करता था।
- बल्बन सैनिकों की संख्या में वृद्धि करता है उनकी योग्यता का भी ध्यान रखता है।

नोट :- ● **हश्म-ए-कल्ब-शाही/केन्द्रीय सेना**

● **हश्म-ए-अतरफ** - प्रांतीय शासकों द्वारा केंन्द्र के लिए रखी गई सेना।

- बलबन दुर्ग को सेना का मुख्य अंग बनाता है।
- हस्ति सेना भी पहली बार बलबन के समय ही सेना का भाग बनता है।
- विद्रोहियों से निपटने के लिए बलबन थाना या चौकी की भी स्थापना करता है।
- सैन्य व्यवस्था में सर्वाधिक सुधार अलाउद्दीन खिलजी द्वारा।
- फिरोजशाह तुगलक सैनिकों को वेतन के बदले जागीर देना प्रारंभ करता है।
- जागीर को वजह कहा जाता था और प्राप्तकर्त्ता को **वजहदार**
- सैनिकों के **वजह** को फिरोजशाह ने वंशानुगत बना दिया। दाग और हुलिया को भी समाप्त करता है।
- फिरोजशाह सैनिकों को वेतन के लिए एक पत्र इतलाक देता था। अधिकारी को दिखाने पर वेतन मिलता था।
- सैनिकों के पास इतलाक बेचने का भी अधिकार था।

तुर्कों के आने के बाद कुछ तकनीक का विकास

- दिल्ली सल्तनत के काल में बारूद और तोपखाने का प्रयोग नहीं होता था। इस काल में (तुर्कों के आने के बाद) चमड़े की जीन, लोहे का रकाब तथा घोड़े में नालबंदी की प्रथा शुरू हुई।

[redacted]

मंजनीक, कुशकर, अर्रादा :-

- ये वैसे यंत्र है जिससे पत्थर या धातु के गोलों को फेंका जाता था।
- **चरखा**- पहली बार तुर्कों द्वारा लाया गया।
- **करघा** - पैर से चलाने वाले करघे का प्रचलन तुर्कों के आने के बाद शुरू।
- **छपाई में ठप्पा छपाई** का प्रचलन तुर्कों के आने के बाद शुरू।
- **कलई शीशे के जार** का प्रचलन तुर्कों के आने के बाद ही शुरू।
- **कागज लेखन कला** में कागज का इस्तेमाल शुरू।
- **जिल्दसाजी की कला** भी प्रारंभ।

जहाज रानी

- दिल्ली सल्तनत में नौसेना की जानकारी नहीं।
- दिशासूचक यंत्र का प्रारंभ फिरोजशाह तुगलक के समय
- तख्तों को जोड़ने के लिए कील एवं क्लैम्प का प्रयोग 1498 के बाद यूरोपीय प्रभाव में शुरू।
- जहाज के लंगर के लिए लोहे का इस्तेमाल सर्वप्रथम यूरोपीय प्रभाव में ही आरंभ।

Scanned with OKEN Scanner